‘मोहन राकेश की रंग- दृष्टि’ - नीलम मिश्र तिवारी

मोहन राकेश हिन्दी के प्रमुख नाटककारों में एक हैं। उनका नाट्य जगत बहुत व्यापक है। आषाढ़ का एक दिन (1958), लहरों के राजहंस (1963, 68) तथा आधे-अधूरे(1969) इनके प्रमुख नाटक हैं। इन्होंने समसामयिक तथा जीवन-अनुभव को नाटकों में यथार्थ रूप में अभिव्यक्त किया है।

नाटक का संबंध मूलतः रंगमंच से है। रंगमंच नाटक को प्रोत्साहित करता है । एक ही नाटक पर नये-नये प्रयोग भी किये जा सकते हैं। इसमें निर्देशकों की भूमिका अति महत्वपूर्ण है । राकेश के नाटक, लहरो के राजहंस, आधे-अधूरे तथा आषाढ़ का एक दिन पर नये-नये प्रयोग हुए। मोहन राकेश ने नाट्य रूढ़ियों को तोड़कर उसे रंगमंच से जोड़ा। उसे प्रयोगशील बनाया ।

मोहन राकेश ने अपने नाटकों में समसामयिक जटिलता, आधुनिक मानव के अंतर्द्वन्द्व को दृश्यात्मक भाषा के द्वारा दर्शाते हुए रंगमंच को सवारा। पात्रों के चरित्र, वातावरण, रंगमंच की प्रभावशीलता तथा अभिनय कला पर अधिक ध्यान दिया। नाटक के शब्दों में रंगमंचीय सम्भावनाओं को ढूढा। अभिनेता, निर्देशक, दर्शक तथा रंगकर्मीयों को महत्व दिया। नाटकों में ध्वनि, प्रकाश, गति, लय, पात्रों के क्रिया कलाप तथा भाषा पर विशेष ध्यान दिया। आधुनिक भाव बोध तथा बदलते हुए मानव-मूल्यों को नाटक के द्वारा रंगमंच पर अभिव्यक्त किया। नाटक तथा अभिनय के बीच समन्वय स्थापित करके राकेश काव्यमय वातावरण का सृजन करते हैं।

‘आषाढ़ का एक दिन’ का मेघ कालिदास, मल्लिका, विलोम सभी को अपने ढंग से प्रभावित करता है। “लहरों के राजहंस” में कामोत्सव का आयोजन, पर्दे के पीछे से

बौद्ध भिक्षुओं का "धम्ममशरणमगच्छामि" स्वर अद्भुत भाव सृष्टि करता है। "आधे-अधूरे" के टूटे- फूटे फर्नीचर, धूल भरी फाइले, घर में लटकता गंदा पाजामा, घर के बिखराव तथा आर्थिक तंगी को प्रकट करता है। इनके दृश्य विधान भी अर्थपूर्ण हैं। मल्लिका का प्रकोस्ठ प्रारम्भ में साफ-सुथरा, स्वस्तिक बना हुआ, लेकिन बाद में धीरे-धीरे उजड़ा हुआ दिखाया है, जो उसके जीवन-विघटन की ओर संकेत करता है। "लहरों के राजहंस" में सारी घटना संध्या से लेकर अगली रात तक ही घटित होती है। "लहरों के राजहंस" नाटक में नंद की स्तब्धता, फिर आहत होकर चले जाना, सुंदरी का सिसकते हुए हथेलियों पर झुकना आदि प्रभावशाली दृश्यों का सृजन हुआ है। "आषाढ़ का एक दिन" नाटक में मेघ द्वारा मानव-चेतना तथा स्मृति को एक सूत्र में बांधा गया है। राकेश ने अपने सभी नाटकों में दृश्य सीमित रखे हैं। सीमित दृश्य के कारण अनेक नाटकीय स्थितियों की सूचना मात्र दी है। नंद के मन का द्वंद्व मंच के बाहर घटता है, मंच पर सूचना दी जाती है। जगमोहन और सावित्री के संबंधों का विवरण जुनेजा द्वारा दिया जाता है। राकेशजी ने नाटकों में भाव-मुद्राओं की सृष्टि की है। मुक अभिनय को महत्व दिया है- जैसे सावित्री का कंघी से सफेद बालों को ढकना, गाल को मलकर चेहरे की झुर्रियों को निकालना, महेंद्र का बार-बार अखबार पढ़ना, अशोक का कैन्ची से अभिनेत्रियों के फोटो काटना, व्यर्थ में कैन्ची चलाना आदि। राजहंसों का पंख फड़फड़ाना, नंद-सुंदरी का एक दूसरे को स्तब्ध होकर देखना। राकेशजी ने अपने अधिकांश नाटकों में प्रकाश, अंधकार तथा संगीत का सम्मिश्रण कर नाटकों के अंत को प्रभावशाली बनाया है। इन्होंने अपने नाटकों में आधुनिक मानव के द्वंद्व, स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों की जटिलता, छटपटाहट तथा घर की तलाश को आदि से अंत तक दिखलाया है। आषाढ़ का एक दिन तथा आधे-अधूरे नाटक मुक्त काशी मंच पर सफलता पूर्वक खेले गये। राकेशजी के ये नाटक नाट्य संस्थाओं तथा रंग कर्मियों के प्रयास से अनेक स्थानों पर मंचित किए गये। आषाढ़ का एक दिन का मंचन अनामिका, (श्यामा नंदजालान,1959)।

दिशांतर, नयी दिल्ली (ओम शिवपुरी,1973), और मिर।न्डा हाउस, दिल्ली (राम गोपाल बजाज,1978) द्वारा किया गया। लहरों के राजहंस का मंचन प्रयाग रंगमंच, इलाहाबाद, (सत्यब्रत सिनहा,1963), राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (ओम शिव पुरी ,1967) और युवा रंगमंच, रांची, (अजय मलकानी,1990) द्वारा तथा आधे-अधूरे का मंचन दिशांतर, नयी दिल्ली (ओम शिव पुरी,1969), अनामिका (श्यामा नन्द जालान,1970) द्वारा किया गया।

<u>निम्न प्रश्न आभ्यास के लिए:</u>

१. मोहन राकेश का वास्तविक नाम क्या था?
१. मदन मोहन गुगलानी|

२. राकेशजी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
२. ८ जनवरी १९२५ ई॰ को अमृतसर में |

३. राकेशजी के पिता का नाम क्या था?
३. करमचन्द गुगलानी|

४. राकेशजी के प्रमुख नाटको का नाम लिखिए|
४. अषाढ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे अधूरे|

५. राकेशजी के मृत्यु वर्ष का उल्लेख किजिए|
५. ३ दिसम्बर १९७२ |

६. संगीत नाटक अकादमी ने राकेश के किस नाटक को पुरस्कृत किया?
६. अषाढ का एक दिन|

७ अषाढ का एक दिन नाटक के दो पुरुष पात्रों का नाम लीखिए?

७. कालिदास, दन्तुल|

८. इस नाटक के दो नारी पात्रों का नाम लिखिए|

८. मल्लिका, अम्बिका|

९. लहरो के राजहंस नाटक का प्रथम स◌ंस्करण कब प्रकाशित हुआ

९. १९६३.

१०. राकेशजी द्वारा रचित एक बीज नाटक का नाम लिखिए|

१०. शायद|